कक्षा : तृतीय– जैनागम स्तोक वारिधि (परीक्षा 04 जनवरी, 2026)

उत्तरतालिका

प्र.1 निम्नलिखित प्रश्नों में से सही उत्तर का क्रमाक्षर कोष्ठक में लिखिए :- 15x1=(15)

(i) अरूपी अजीव के भेद है-
(क) 560 (ख) 530
(ग) 30 (घ) 198 (ग)

(ii) एकत्व भावना किसने भाई थी-
(क) भरत चक्रवर्ती ने (ख) अनाथी मुनि ने
(ग) शालिभद्र जी ने (घ) नमिराज ऋषि ने (घ)

(iii) 'आयम्बिल तप करना' किस तप का भेद हैं-
(क) रस परित्याग (ख) कायक्लेश
(ग) प्रतिसंलीनता (घ) ऊनोदरी (क)

(iv) 'उपकरण का त्याग करना' व्युत्सर्ग है-
(क) शरीर व्युत्सर्ग (ख) उपधि व्युत्सर्ग
(ग) गण व्युत्सर्ग (घ) भक्तपान व्युक्सर्ग (ख)

(v) पुरुषलिंग में एक समय में मोक्ष जा सकते हैं-
(क) 10 (ख) 20
(ग) 108 (घ) 30 (ग)

(vi) संवर तत्त्व के जघन्य 20 और उत्कृष्ट भेद होते हैं-
(क) 55 (ख) 22
(ग) 12 (घ) 57 (घ)

(vii) जीव संसार में परिभ्रमण करता है-
(क) 18 पाप सेवन से (ख) 18 पाप त्यागने से
(ग) पाप घटने से (घ) इनमें से कोई नहीं (क)

(viii) अव्यवहार राशि में भवी जीव कितने होते हैं-
(क) संख्यात (ख) असंख्यात
(ग) अनन्तानन्त (घ) अल्प (ग)

(ix) जयन्ती बाई के प्रश्न किस सूत्र से लिए गये है-
(क) उत्तराध्ययन सूत्र (ख) भगवती सूत्र
(ग) अनुयोग द्वार सूत्र (घ) दशवैकालिक सूत्र (ख)

(x) भव भ्रमण के थोकड़े के आधार पर जीव उत्कृष्ट कितनी बार मातापने उत्पन्न हुआ है-
(क) एक बार (ख) अनेक बार
(ग) अनन्त बार (घ) इनमें से कोई नहीं (ग)

(xi) चार अनुत्तर विमान में कितनी बार से अधिक जन्म नहीं होता-
(क) एक बार (ख) तीन बार
(ग) छह बार (घ) दो बार (घ)

(xii) जघन्य और उत्कृष्ट पृथक्त्व मुहूर्त में कौन से देव श्वासोच्छ्वास लेते हैं-
(क) भवनपति देव (ख) ज्योतिषि देव
(ग) वैमानिक देव (घ) वाणव्यन्तर देव (ख)

(xiii) जघन्य 10 पक्ष, उत्कृष्ट 14 पक्ष में कौनसे देवलोक के देव श्वासोच्छ्वास लेते हैं-
(क) दूसरा देवलोक (ख) तीसरा देवलोक
(ग) छठा देवलोक (घ) पाँचवें देवलोक (ग)

(xiv) देवताओं में श्वास लेने व छोड़ने की प्रक्रिया चलती है-
(क) अन्तर्मुहूर्त तक (ख) 30 मुहूर्त तक
(ग) एक अहोरात्रि तक (घ) एक पक्ष तक (क)

(xv) कितने मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थ का सुख पाँच अनुत्तर विमान के देवों के सुख से बढ़कर होता है-
(क) नो मास (ख) दस मास
(ग) ग्यारह मास (घ) बारह मास (घ)

प्र.2 निम्न प्रश्नों के उत्तर 'हाँ' अथवा 'नहीं' में द8ीजिए :- 15x1=(15)

(i) जीव का एक भेद उपयोग लक्षण है। (हाँ)
(ii) संवर भावना अर्जुन अणगार ने भाई थी। (नहीं)
(iii) स्वाध्याय के 5 भेद होते हैं। (हाँ)
(iv) हिंसा, झूठ, चोरी आदि दोषों का सेवन करना धर्मध्यान का लक्षण है। (नहीं)
(v) अजितनाथ जी तीर्थंकर सिद्ध हुए। (हाँ)
(vi) पाप कर्म भोगने की 82 प्रकृतियाँ है जो 8 कर्मों के उदय में आने से भोगी जाती है। (हाँ)
(vii) सुंसुमार स्थलचर होता है। (नहीं)
(viii) एक फूंक प्रमाण सचित्त वायु में असंख्यात जीव होते हैं। (हाँ)
(ix) व्यवहार राशि में जीव हमेशा बराबर रहते हैं। (हाँ)
(x) अव्यवहार राशि के सभी भवसिद्धिक जीव मोक्ष प्राप्त करते हैं। (नहीं)
(xi) जो जीव धर्म का आचरण करते हैं, वे जीव सोते हुए अच्छे हैं। (नहीं)
(xii) जयन्ती बाई ने दीक्षा ग्रहण कर केवलज्ञान को प्राप्त कर मोक्ष गति को प्राप्त किया। (हाँ)
(xiii) भव भ्रमण का थोकड़ा भगवती सूत्र से लिया गया है। (हाँ)
(xiv) निगोद से प्रत्येक समय असंख्यात जीव प्रत्येक काय में आते हैं। (हाँ)
(xv) सूक्ष्म एवं साधारण वनस्पतिकाय के जीव जिन्होंने अभी तक अनन्त कायपने को एक बार भी नहीं छोड़ा, उसी में जन्म-मरण कर रहे हैं, वे व्यवहार राशि के जीव होते हैं। (नहीं)

प्र.3 निम्नलिखित में क्रम से सही जोड़ी मिलाकर उत्तर रिक्तस्थान में लिखिए:- 10x1=(10)

(i)	शुभयोग	(क) एक दिन का संयम	संवर तत्त्व
(ii)	अलाभ	(ख) ज्योतिषी देव	परीषह
(iii)	अन्यत्व	(ग) एक पक्ष	मृगापुत्र जी
(iv)	अव्यवहार राशि	(घ) परीषह	भवी जीव
(v)	धर्मी जीव	(च) संवर तत्त्व	जागते हुए अच्छा
(vi)	असंख्यात कोड़ाकोड़ी योजन	(छ) मृगापुत्र जी	लम्बा-चौड़ा लोक
(vii)	बकरियों के बाड़े का दृष्टान्त	(ज) भवी जीव	भव भ्रमण का थोकड़ा
(viii)	पृथक्त्व मुहूर्त में श्वासोच्छ्वास	(झ) जागते हुए अच्छा	ज्योतिषी देव
(ix)	15 अहोरात्रि	(य) लम्बा-चौड़ा लोक	एक पक्ष
(x)	गजसुकुमाल	(र) भव भ्रमण का थोकड़ा	एक दिन का संयम

प्र.4 मुझे पहचानो :- 15x1=(15)

(i) मैं प्रायश्चित्त का ऐसा दोष हूँ, जो दूसरों को सुनाने के लिए जोर-जोर से बोलकर आलोचना करने से लगता है। सद्दाउलगं
(ii) मुझे वृत्ति संक्षेप भी कहा जाता है। भिक्षा चर्या
(iii) मैं मिथ्यात्व, अव्रत, प्रमाद, कषाय और अशुभ योग का भेद हूँ। आश्रव का जघन्य भेद हूँ
(iv) मैं कर्मपुद्गलों को आत्मा से अलग करने वाला तत्त्व हूँ। निर्जरा तत्व
(v) मैं छाती से चलने वाले तिर्यंच पंचेन्द्रिय का भेद हूँ। उरपरिसर्प

(vi) कर्मभूमि, अकर्मभूमि, अन्तर्द्वीप मेरे भेद हैं। गर्भज मनुष्य

(vii) मैं गृहस्थ के वेश में मोक्ष गई हूँ। मरूदेवी माता

(viii) मैं पुरुष पर्याय में रहते हुए मोक्ष में जाने वाला पुरुषलिंग सिद्ध का उदाहरण हूँ। गौतम स्वामी

(ix) भगवती सूत्र शतक 12 उद्देशक 2 में मेरे पूछे प्रश्न एवं भगवान के उत्तर हैं। जयन्ती बाई

(x) मेरी तरह जयन्ती श्रमणोपासिका ने दीक्षा लेकर केवल ज्ञान प्राप्त कर मोक्ष गति को प्राप्त किया। देवानन्दा

(xi) मुझ में आया हुआ जीव अवश्य ही मोक्ष में जाता है। व्यवहार राशि

(xii) मेरा त्याग कर जीव संसार से तिर जाता है। 18 पापों को

(xiii) दूसरे देवलोक से ऊपर मेरे रूप में जन्म नहीं होता। देवियों के रूप में

(xiv) संसार में ऐसी कोई जगह नहीं बची, जहाँ जीव ने जन्म-मरण नहीं किया हो। इस बात की पुष्टि करने का मैं प्रथम कारण हूँ। लोक शाश्वत है

(xv) मुझे सम्बोधित कर भगवान कहते हैं कि यह जीव सब जीवों के माता-पिता आदि परिवारपने अनन्त बार उत्पन्न हुए हैं। गौतम

प्र.5 निम्न प्रश्नों के उत्तर एक-दो वाक्यों में दीजिए- 9x2=(18)

(i) साहत्थिया क्रिया को परिभाषित कीजिए।

उ. अपने हाथों से जीवों को मारने अथवा ताड़ना करने से लगने वाली क्रिया।

(ii) अशुचि भावना तथा आश्रव भावना किसने भाई थी ?

उ. अशुचि-सनत्कुमार चक्रवर्ती ने आश्रव- समुद्रपालमुनि ने।

(iii) रस परित्याग तप के प्रथम दो भेद अर्थ सहित लिखिए।

उ. 1. णिव्वियतिय दूध, दही, घी, तेल, मीठा आदि विगयों से रहित आहार करना।
2. पणीय रस परिच्चाए-स्निग्ध-गरिष्ठ आहार का त्याग करना।

(iv) एक सिद्ध को उदाहरण सहित परिभाषित कीजिए।

उ. एक समय में अकेला ही मोक्ष जाने वाले जीव एक सिद्ध कहलाता है। जैसे- महावीर स्वामी।

(v) अहो भगवन्! किस कारण से जीव संसार को बढ़ाता है और किस कारण से घटाता है ?

उ. हे जयन्ती ! 18 पापों के आचरण से जीव संसार बढ़ाता है 18 पापों से निवृत होकर संसार घटाता हैं।

(vi) अहो भगवन्! जीवों का सिद्धिपना स्वभाव से है या परिणाम से ?

उ. हे जयन्ती ! जीवों का सिद्धिपना स्वभाव से है परिणाम से नहीं।

(vii) असुर कुमार के देव जघन्य-उत्कृष्ट कितने समय में श्वासोच्छ्वास लेते हैं ?

उ. जघन्य 7 स्तोक उत्कृष्ट एक पक्ष से अधिक समय में श्वासोच्छवास लेते है।

(viii) एकेन्द्रिय, बेइन्द्रिय जीव किससे श्वास लेते हैं व छोड़ते हैं ?

उ. एकेन्द्रिय जीव स्पर्शनेन्द्रिय से श्वास लेते व छोड़ते हैं। बेइन्द्रिय जीव स्पर्शनेन्द्रिय व मुख से श्वास लेते व छोड़ते हैं।

(ix) दस मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण निर्ग्रन्थों का सुख किन देवों के सुख से बढ़कर होता है ?

उ. आणत, प्राणत, आरण और अच्युत (9,10,11,12) देवलोकों के देवों से बढ़कर होता है।

प्र.6 निम्न प्रश्नों के उत्तर दो-तीन पंक्तियों में लिखिए : - 9x3=(27)

(i) अरूपी अजीव के 10 भेद लिखिए।

उ. धर्मास्तिकाय, अधर्मास्तिकाय, आकाशस्तिकाय इन तीनों के 3-3 भेद स्कन्ध, देश, प्रदेश ये 9 भेद है। दसवाँ काल।

(ii) दस यति धर्म के नाम लिखिए।

उ. 1. खंती (क्षमा), 2. मुक्ति, 3. आर्जव, 4. मार्दव, 5. लघुता, 6. संयम, 7. सत्य, 8. तप, 9. त्याग,

10. ब्रह्मचर्य। ये दस यति धर्म है।

(iii) प्रत्येक बुद्ध सिद्ध के बारे में उदाहरण सहित लिखिए।

उ. जो किसी के उपदेश बिना ही पदार्थ विशेष को देखकर वैराग्य प्राप्त करते हैं और दीक्षा धारण कर मोक्ष में जाते हैं वे प्रत्येक सिद्ध है जैसे- नमिराज, करकंडू मुनि आदि।

(iv) प्रकृति बन्ध किसे कहते हैं?

उ. जीव के साथ सम्बन्ध कर्म पुद्गलों में ज्ञान को आवरण करने, दर्शन को रोकने, सुख दुःख देने आदि अलग-अलग स्वभाव का होना प्रकृति बन्ध कहलाता है।

(v) श्रोत्रेन्द्रिय के वश में हुआ जीव किस प्रकार की स्थिति एवं रस का बन्ध करता है ?

उ. थोड़े काल की स्थिति हो तो बहुतकाल की स्थिति करता है मंद रसवाली हो तो तीव्र रस वाली करता है। आयुष्य बांधता है अथवा नहीं भी बांधता। असातावेदनीय कर्म बार-बार बांधता है।

(vi) जीव के भारी होने का कारण क्या है और किस प्रकार जीव हल्का होता है ?

उ. हे जयन्ती ! 18 प्रकार के पापों के आचरण से जीव भारी होता है और इन पापों से विरत होने से जीव हल्का होता है।

(vii) श्वासोच्छ्वास के थोकड़े में भवनपति देव श्वासोच्छ्वास किस प्रकार लेते है? स्पष्ट कीजिए।

उ. भवनपति देवों में असुर कुमार के देव जघन्य 7 स्तोक में उत्कृष्ट एक पक्ष से अधिक समय में श्वासोच्छ्वास लेते हैं। शेष नव निकाय के देव जघन्य 7 स्तोक और उत्कृष्ट पृथक्त्व मुहूर्त में श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

(viii) चार अनुत्तर विमान के देव और सवार्थसिद्ध विमान के देव किस प्रकार श्वासोच्छवास लेते हैं ?

उ. चार अनुत्तर विमान के देव जघन्य 31 पक्ष उत्कृष्ट 33 पक्ष और सर्वार्थसिद्ध विमान के देव अजघन्य अनुत्कृष्ट 33 पक्ष में श्वासोच्छ्वास लेते हैं।

(ix) पाँच मास व छः मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख कौनसे देवों के सुख से बढ़कर होता है ?

उ. 5 की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख सूर्य-चन्द्र ज्योतिषी देवों के सुख से बढ़कर होता है। 6 मास की दीक्षा पर्याय वाले श्रमण-निर्ग्रन्थ का सुख सौधर्म और ईशान देवों के सुख से बढ़कर होता है।